रियूनियन में हिंदी प्रशिक्षण : मेरे अद्वितीय अनुभव

डॉ. राजरानी गोबिन

प्रस्तावना

महात्मा गांधी संस्थान का प्रमुख उद्देश्य भारतीय भाषाओं एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार करना रहा है। इसी लक्ष्य की पूर्ति हेतु, सन् 2014 में महात्मा गांधी संस्थान, मॉरिशस एवं रियूनियन की नगरपालिका, सें-देनी के मध्य संधि का हस्ताक्षर हुआ। महात्मा गांधी संस्थान द्वारा 22 जुलाई एवं 17 अगस्त, 2013 के बीच सें-देनी में, हिंदी के भावी शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण-कार्यक्रम चलाया गया। न केवल प्रशिक्षण देने का उत्तरदायित्व मुझे सौंपा गया अपितु प्रशिक्षणार्थियों के चयन का दायित्व भी, क्योंकि जिन प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण के लिए आवेदन-पत्र भेजा था उनमें से न तो किसी के पास हिंदी में डीप्लोमा था न डीग्री। अत: मुझे ही रियूनियन जाकर फ्रेंच माध्यम में उनका इंटरव्यू लेना पड़ा। उनकी मौखिक अभिव्यक्ति एवं लेखन कौशल दोनों का परीक्षण लेना पड़ा। सुबह की फ़्लाइट पकड़, सें-देनी पहुंची। नौ प्रशिक्षणार्थियों का चयन कर, शाम को ही स्वदेश वापस आई।

प्रशिक्षणार्थियों का परिचय

जिन नौ प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया, वे न केवल अलग-अलग भाषा एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के थे अपितु उनकी हिंदी में प्रशिक्षण पाने की प्रेरणा भी विभिन्न कारणों से थी। फ्रांसीसी नागरिक जां लूक गॉद्फ्रुआ का फ्रांस निवासी पांडिचेरी कन्या के साथ विवाह, उसे हिंदी प्रेमी एवं प्रचारक बनने का अभिलाषी बना रखा था। जां लूक की एक यात्रा अभिकरण ट्रेवल एजेंसी भी है, भारत में पर्यटन हेतु रियूनियन वासियों को लेकर जाता है और मार्गदर्शक की भूमिका स्वयं निभाता है। हिंदी भाषा एवं भारतीय संस्कृति का ज्ञान इस दृष्टि से उनके लिए अत्यन्त लाभदायक था। गुजराती मूल की तीसरी पीढ़ी तथा इंग्लैंड से अंग्रेज़ी माध्यम से क़ुरान संबंधित विषय पर पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त करने वाली सामिया लोकात पुन: अपनी जड़ की ओर लौटने की प्रेरणा से हिंदी के प्रति आकृष्ट हुई थी। गुजरात से रियूनियन में ब्याही अंग्रेज़ी अध्यापिका पूजा अमृतलाल, पांडिचेरी से रियूनियन में ब्याहा तमील, फ्रेंच एवं हिंदी भाषी, भारती सारांगम जैसे छात्रों की कक्षा में उपस्थिति ने समरस, पारंपरिक हिंदी कक्षा को नया आयाम, नई गति एवं स्फूर्ति प्रदान की। एक मॉरिशसीय प्रशिक्षणार्थी भी थी जो पच्चीस वर्षों से रियूनियन में सपररवार आवासी है तथा नगरपालिका में योगासन की तशतक्षका है।

निस्सन्देह इस चुनौतीपूर्ण प्रशिक्षण से सुखद एवं ज्ञान वर्द्धक अनुभव दोनों प्रशिक्षक तथा प्रशिक्षणार्थियों को प्राप्त हुए।

प्रशिक्षण की कक्षाएँ

नगरपालिका के सभागार में ही प्रशिक्षण की कक्षाएँ लगीं। प्रौद्योगिक उपकरणों का आश्रय लेते हुए, फ्रेंच भाषा के माध्यम से, विदेशी-भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण की विधियों, प्रणालियों का ज्ञान प्रदान किया गया। चुंकि प्रशिक्षणार्थियों को आगे चलकर 12-13 वर्षीय छात्रों को पढ़ाना था, शिक्षण-विधि भी तदनुकूल चयनित हुई यथा विदेशी छात्रों में रुचि कैसे उतपन्न किया जाए, विदेशी भाषा-शिक्षण की विधियाँ, सामूहिक कार्य प्रणाली , सामूहिक विचार मंथन विधि, खेल विधी, भाषिक निमज्जन विधि, भाषिक निवास आदि।

प्रत्येक सत्र में विधि के अतिरिक्त शुद्ध उच्चारण के साथ वर्ण विन्यास / अक्षर विन्यास की शिक्षा भी दी गई। महात्मा गांधी संस्थान द्वारा तैयार की गई पुस्तिका Une Introduction à l'hindi (हिंदी एक परिचय) तथा उससे संबद्ध ओडिओ सीडी के प्रयोग से भी प्रशिक्षणार्थियों को अभ्यस्त कराया गया। शुद्ध उच्चारण, उचित आरोह-अवरोह के साथ उनसे आदर्श पठन करवाया गया। विडंबना यह थी कि प्रशिक्षणार्थियों के फ्रेंच उच्चारण में भी सुधार लाना पड़ा जिससे कि भविष्य में छात्र उनकी खिल्ली न उड़ाएँ।

प्रमाण पत्र वितरण समारोह

प्रशिक्षणार्थियों का मूल्यांकन भी हुआ। 17 अगस्त को फ्रेंच भाषा में संचालित प्रमाण पत्र वितरण समारोह, भव्य रूप से संपन्न किया गया। इसके अंतर्गत, महात्मा गांधी संस्थान के भूतपूर्व महानिदेशक श्री बीजय मधू एवं निदेशिका डॉ. विद्योत्मा कुंजल, सें-देनी नगरपालिका के महापौर ज़िलबेर आनेत, भारतीय वाणिज्यदूत (कान्सुल) श्री जार्ज राजू तथा सें-देनी के कुछ एम.एल.ए. भी उपस्थित थे। उस फ्रेंच-भाषी देश में हिंदी भाषा की गरिमा घनीभूत हुई। प्रशिक्षण की झलकियाँ *आंटेन रेउननयों के जियोनिसिते कार्यक्रम* के अंतर्गत दर्शा ई ग ई (http:www.antennereunion.fr/Programmes/Dionicité-émission du 07-08-2013) स्थानिय पत्रों *ले जुर्नाल दे लिल दे ला रेउनियों* (Le journal de l'île de la Réunion) और *ले कोचिजिएं* (Le Quotidien) में महात्मा गांधी संस्थान द्वारा संपन्न इस महत प्रशिक्षण कार्य से संबंधित लेख भी प्रकशित हुए।

हिंदी और मीडिया

प्रशिक्षणार्थियों में हिंदी के प्रति इतना विशेष लगन था कि हर लेक्चर उनके लिए एक वरदान जैसा था। दैनन्दिन जीवन में उन्हें हिंदी में संवाद करने का अवसर ही प्राप्त नहीं होता है। रियून्यन में हिंदी दिखती नहीं है, सुनाई भी नहीं देती है। एक ही रेडियो चनेल है जहाँ बिना बातचीत, बिना घोषणा / अनाउंसमेंट की केवल हिंदी गाने चलते हैं। Canal Satellite डिश टी.वी. लगाने पर केवल ज़ी टी.वी. आती है जिसे बहुत कम लोग देखते हैं। हिंदी बोलने की इच्छा होने पर कुछ प्रशिक्षणार्थी प्रतिदिन भारत फोन कर, स्काइप द्वारा अपने रिश्तेदारों या हित मित्रों से बात करते हैं। प्रशिक्षणार्थी पूजा मोधा कब रियून्यन में हिंदी बोल पाई? जब उसका तीन वर्षीय बेटा हिंदी बोलने लायक बना। रियून्यन में अधिकांश भारतीय मूल के वासी दक्षिण भारत के वंशज हैं विशेषकर पोंडिचेरी अथवा तमीलनाडू के। अत: वहाँ मॉरीशस जैसी उपजाऊ भूमि कहाँ जहाँ हिंदी पुष्पित-पल्लवित हो पाती।

हिंदी और भारतीयसंस्कृति

निस्सन्देह हिंदी के माध्यम से भारतीय अस्मिता का बोध रियून्यन में धीरे-धीरे बढ़ने लगा है। 15 अगस्त 2014 को फ्रांस विभाग रियून्यन में भारतीय वाणिज्यदूत जोर्ज राजू के निवास स्थल, सेंत-मारी में, जब तिरंगा झंडा नीले नभ में फहराया गया तब राष्ट्रीय गान एवं हिंदी गीतों की गूंज से, समस्त वातावरण प्रफूल्लित हो उठा था। वहीं कई ऐसे डेंटिस्ट, व्यापारियों से मैं मिली जिन्होंने हिंदी के प्रति अपना नोस्टेल्जिया व्यक्त किया। भारतीय स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में ही, रात्रि में सें-देनी नगरपालिका के सभागार में, भारतीय वाणिज्य दूतावास एवं नगरपालिका के मिलेजुले सहयोग से पहली बार, एक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ था। कार्यक्रम का सांचालन फ्रेंच भाषा में हुआ। वहाँ कुछ पच्चीस वर्षों से बसे एक मॉरीशस दंपति ने जब (बेसूरा ही सही) हिंदी गीत गाया तब उसकी खूब सराहना हुई। रियून्यन के एक प्रसिद्ध सेगा गायक की बेटी ने ज्यों ही *जन गण मन अधिनायक जय है* गाना प्रारंभ किया तो लोगों की रोंगटें खड़ी हो गयीं। हिंदी के विश्वजनीन रूप का आभास हुआ।

हिंदी एवं सृजनातमक कौशल

छात्रों में सृजनातमक कौशल एवं आत्माभिव्यक्ति के विकास हेतु कुछ उपाय सुझाते समय मैंने प्रशिक्षणार्थियों को स्वयं *'माँ'* विषय पर कविताएँ रचने का आदेश दिया। कविता रचते-रचते कुछ लोग

रो पड़े। कविता पढ़ते समय उनका कण्ठ अवरुद्ध हो गया। माँ से बिछड़ने का दर्द मात्र जननी माँ से विछोह जैसा नहीं लगा, मुझे भारत माता का व्यामोह लगा। एक प्रशिक्षणार्थी ने उस कुंठा से मुक्ति पाई जिससे वह वर्षों से ग्रस्त था। उसके भारत वाले सगे संबंधियों ने उस पर यह आक्षेप लगा रखा था कि वह अपनी माँ की मृत्यु का कारण है, उसी के विरह में तड़प-तड़प कर माँ ने प्राण त्याग दिए थे। उसकी इस कुंठा को अन्य प्रशिक्षणार्थियों तथा मैंने मिलकर दूर किया। आज *ओन लाइन* हिंदी शिक्षण की बात चल रही है। क्या इस प्रकार का विरेचन ओन लाइन शिक्षण से संभव हो पाता? मेरा निजी अनुभव कहता है: कदापि नहीं। उस प्रशिक्षणार्थी को थपकी देकर मैंने चुप करवाया था। एक शिक्षक का प्रमुख गुण प्रेम है, उस प्रेम के लिए साक्षात दर्शन आवश्यक हैं।

प्रशिक्षणार्थियों कृत कुछ कविताएँ जिसे सुनकर जन्मभूमि भारत का हृदय भी दहल जाए:

माँ आज तुम्हारी याद करता हूँ
जहाँ-जहाँ मैं जाऊँ,
जो जो भी मैं करूँ,
लगता है हर समय तुम मेरे ऊपर
नज़र रखती रहती हो।
अरे माँ! मैं तो बच्चा नहीं रहा
फ़िर भी मुझे मालूम है
कि माँ को याद करके,
या माँ के पास आकर,
मैं हमेशा बच्चा ही रहूँगा!

जां लुक

मीलों दूर है मेरी माँ ,
मेरे सबसे करीब है मेरी माँ ।
बिन बोले बिन कहे,
सब जाने मेरी माँ ।
इतनी दूर से न जाने कैसे
पहचाने मुझे मेरी माँ ।

पूजा मोधा

माँ माँ प्यारी माँ!
मुझसे बहुत प्यार करती माँ।
दूर जब तुझसे माँ,
जीवन का अर्थ पता चला तबसे माँ।
तेरी झप्पी, तेरा लाड़, बहुत याद आता माँ।
सुबह, दोपहर, शाम रात तुझे पुकारती थी माँ।
तेरे सिर पर वह हाथ फिराना,
आँख में आँसू लाता माँ।
सोच रही हूँ दौड़ आ जाऊँ,
गोद में सो जाऊँ माँ।

पूजा अम्रतलाल

विदाई की बेला

प्रशिक्षण के अंतिम दिन प्रशिक्षणार्थी अत्यंत क्षुब्ध इसलिए हुए क्योंकि उनको जोड़ने वाली एकमात्र कड़ी मैं ही थी और मेरे मॉरिशस लौटने के पश्चात न उन्हें हिंदी में संप्रेषण का अवसर मिलेगा न संप्रेषण करने की उत्कट इच्छा होगी। अपनी ओर से मैंने उनको यही सुझाव दिया कि महीने में एक बार मिलने का कार्यक्रम बनाएँ, परस्पर संवाद बनाए रखें तथा मेरे संपर्क में भी रहें। परंतु एक बार बिछड़े तो यह योजना अधूरी रह गई। उनकी दी हुई घड़ी हमेशा उनकी याद दिलाती रहती है।

रियून्यन में हिंदी शिक्षण

प्रशिक्षण के पश्चात जब नगरपालिका द्वारा दो-तीन **माध्यमिक** विद्यालयों में पाठ्य सहगामी गतिविधि के रूप में हिंदी शिक्षण हेतु विज्ञप्ति निकाली गई तो सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं मिली। मुझे अत्यधिक निराशा हुई क्योंकि वहाँ तमिल भाषा के समर्थक अधिक हैं, इस टापू में तमिलनाडू प्रांत के वंशज ही अधिक हैं और कुछ उनका संस्थागत प्रयास भी रहा है कि हिंदी के स्थान पर तमिल को ब ढ़ावा दिया जाए। परंतु देवों की भाषा के प्रवाह को कौन रोक पाया है ? दिसंबर 2014 में शुभ समाचार प्राप्त हुआ कि इस बार कुछ **प्राथमिक** विद्यालयों में पाठ्य सहगामी गतिविधि के रूप में हिंदी शिक्षण प्रारंभ होने जा रहा है, मेरे लिए यह किसी सम्मान या पुरस्कार से ब ढ़कर था। किसी विदेशी देश में, बाल्यावस्था से ही बच्चों में, हिंदी के बीजारोपण में अपना हाथ बटा पाना, मेरे लिए एक महत उपलब्धि है।

आज 2015 में पूजा मोधा, सुरेन्द्र कुमार बड़ी तन्मयता एवं गर्व के साथ *सें-देनी* के कुछ विद्यालयों यथा *एकोल सांत्राल, एकोल ज़ुएंविल, एकोल ज़ुल रेदेले बे* में छात्रों की अनेक छोटी-छोटी टोलियों को हिंदी भाषा से परिचित करा चुके हैं। पाठ्यक्रम सात सप्ताह का होता है और सप्ताह में चारों दिन (केवल चार

ही दिन प ढ़ाई चलती है) एक-एक घंटे हिंदी का पठन –पठन चलता है। सुरेन्द्र कुमार के मतानुसार *"छात्रों की रुची सराहनीय है। मुझे भी उनको पढ़ाना बहुत अच्छा लगता है।"*

निष्कर्ष तथा सुझाव

मैंने जो अनुभव ग्रहण किया उसके आलोक में मैं यहीं कहना श्रेयस्कर समझती हूँ कि यदि रियूनियन में हिंदी का प्रचार-प्रसार करना है तो प्रौढ़ लोगों को भी प्रेरित करना पड़ेगा। हिंदी के प्रति ललक मैंने प्रौढ़ लोगों में देखी है ,विशेषकर उन गुजरातियों में जो वर्षों पहले मेडागास्कर के निवासी थे और वहाँ की सामाजिक अव्यवस्था, अराजकता के कारणवश रियूनियन में पुन: प्रवास किया है। यदि एक माँ को हिंदी पढ़ा दी गई तो आने वाली भावी पीढ़ी में भी हिंदी का बीजांकुरण हो गया। कक्षाएँ साक्षात लगनी चाहिए न की on line अथवा distance education के माध्यम से। लोगों को प्रेरित तभी कर पाएँगे जब उनके हृदय की तंत्रियों को छू पाएँ, distance से यह संभव नहीं है। दूरियों को पाटने का प्रयास करें, दूरियों को बढ़ाने का अभियान न चलाएँ! निष्कर्ष रूप में रियूनियन के संदर्भ में वांछनीय सुझावों को दोहरा देना उचित होगा। सुझाव इस प्रकार हैं :

- रियूनियन में लगातार हिंदी का प्रचार किया जाए। इसके लिए विशेष पहल करनी पड़ेगी क्योंकि रियूनियन में हिंदी विरोधी दल यथा तमिल भाषा के पक्के समर्थक पहले से वहाँ कार्यरत हैं।
- प्रौढ़ जनों के शिक्षण पर बल दिया जाए क्योंकि उनमें जड़ की ओर लौटने की पिपासा है।
- प्रौद्योगिकी का सहारा लेकर शिक्षण किया जाए पर शिक्षण साक्षात हो। साक्षात शिक्षण के अंतर्गत वास्तविक समस्याओं से अवगत होंगे और उनका समाधान भी संभव होगा।
- प्रौढ़ लोगों का हिंदी शिक्षण सायंकाल को अथवा शनिवार को ही संपन्न किया जाए जब कार्यरत लोगों को अवकाश प्राप्त हो।

एसोशिएट प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग
महात्मा गांधी संस्थान, मोका, मॉरिशस
rajranigobin@yahoo.com